



# 'स्वयंप्रभा'

मूल्यांकन के नये आयाम

संपादक

डॉ. अनिल सिंह

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

I.S.B.N. : 978-93-90265-07-7

- पुस्तक : 'स्वयंप्रभा' मूल्यांकन के नये आयाम  
सम्पादक : डॉ. अनिल सिंह  
प्रकाशक : अमन प्रकाशन  
104-A/80-C रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.)  
मो. : 08090453647, 9044344050  
ऑफिस : 0512-3590496  
संस्करण : प्रथम सन् 2020  
सर्वाधिकार : सम्पादकाधीन  
मूल्य : ₹ 550.00 मात्र  
मुद्रक : साक्षी ऑफसेट, यशोदानगर, कानपुर  
शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

SWYAMPARBHA MULYANKAN KE NAYE AAYAM

Edited by : Dr. Anil Singh

Price : Rs. Five Hundred Fifty Only

# अनुक्रमणिका

|                                                                                                 |          |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| ■ भूमिका - डॉ. कर्ण सिंह चौहान                                                                  | ( v )    |
| ■ आत्मिका - डॉ. अनिल सिंह                                                                       | ( viii ) |
| ■ कवि रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत' का परिचय                                                        | 13       |
| ❖ हिन्दी ही नहीं, पूरे रामकथा-संसार की उपलब्धि<br>- डॉ. विद्यानिवास मिश्र                       | 15       |
| ❖ परम्परा से हटकर परम्परा में कुछ जोड़ना - गंगाप्रसाद विमल                                      | 16       |
| ❖ कला और साहित्य के दानवी तत्वों से सावधान करती 'स्वयंप्रभा'<br>- डॉ. रमेश ऋषिकल्प              | 17       |
| ❖ कवि 'उद्भ्रांत' की काव्य-यात्रा - डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय                                      | 22       |
| ❖ स्वयंप्रभा की रचना प्रक्रिया एवं नवीन परिकल्पना<br>- डॉ. रामप्रकाश कुशवाहा                    | 27       |
| ❖ बहुआयामी कृति : स्वयंप्रभा - डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय                                          | 33       |
| ❖ आधुनिक हिन्दी रामकाव्य परंपरा और स्वयंप्रभा<br>- अनन्त द्विवेदी                               | 38       |
| ❖ आधुनिक कविता की उपलब्धि : स्वयंप्रभा<br>- डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय                                 | 45       |
| ❖ 'स्वयंप्रभा' रामकथा की अज्ञात किंतु महत्वपूर्ण कड़ी<br>- डॉ. राहुल पाण्डेय                    | 54       |
| ❖ स्वयंप्रभा : प्राचीन और नवीन का अद्भुत समन्वय<br>- प्रा. वंदना गुप्ता                         | 59       |
| ❖ नयी विचारणा का काव्य 'स्वयंप्रभा' - डॉ. बली सिंह                                              | 65       |
| ❖ स्वयंप्रभा : सूत्र और सार्थकता - डॉ. अलका धनपत                                                | 73       |
| ❖ स्वयंप्रभा की कथा-संरचना - डॉ. एस.टी. आवटे                                                    | 79       |
| ❖ स्वयंप्रभा : मानव उन्नयन की आभा - डॉ. निर्मला त्रिपाठी                                        | 84       |
| ❖ उद्भ्रांत की 'स्वयंप्रभा' : रामायण के अल्पज्ञात<br>चरित्र की पुनर्रचना - डॉ. दिनेश कुमार माली | 89       |

## आधुनिक कविता की उपलब्धि : स्वयंप्रभा

♦ डॉ. लक्ष्मी पांडेय

हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंग गौर विश्वविद्यालय,  
सागर, म.प्र.

‘स्वयंप्रभा’ का अर्थ है जो स्वयं अपने प्रकाश से प्रकाशित हो। ‘अप्य दीपः’ अपना दीपक स्वयं हो और अपने प्रकाश से दूसरों का मार्गनिर्देशन करे। उद्भ्रान्त का खण्डकाव्य ‘स्वयंप्रभा’ इस दृष्टि से श्लेष का निर्वहन करता है कि इसमें तपस्विनी स्वयंप्रभा की कहानी है एवं उपदेशात्मकता, प्रेरणा तथा ज्ञान की दृष्टि से यह स्वयं स्वयंप्रभा है। यह इस तरह भी अपने नाम को सार्थक करती है कि इसमें वर्णित मूल कथा जो तपस्विनी स्वयंप्रभा पर केन्द्रित है, वह तथा कण्डु ऋषि की कथा भी मूल कथा की तरह ही पाठकों के लिए नयी और प्रेरणादायी है। ये दोनों कथाएँ ऋषियों के, संन्यासियों के धर्म-कर्म पर तो प्रकाश डालती ही हैं, पर्यावरण चेतना भी जागृत करती हैं। तपस्विनी स्वयंप्रभा राम के दर्शन पाकर कृतार्थ हुई, और स्वर्ग लोक चली गई, किन्तु वानर समूह की सहायता से पूर्व उसने परोपकार का ऐसा कोई कार्य नहीं किया, कि संसार उसे याद रखता। गुफा में बैठकर तपस्या करने के पीछे उसका उद्देश्य केवल राम के दर्शन प्राप्त करना था, वह भी तब संभव हुआ जब उसने वानर समूह की सहायता की। इसलिए बाबा तुलसीदास ने उसका नामोल्लेख नहीं किया, क्योंकि ऐसे बहुत से तपस्वी थे जिनको राम ने वनवास के दौरान दर्शन देकर कृतार्थ किया। उन अनाम तपस्वियों की सूची में स्वयंप्रभा भी शामिल थी किन्तु गुमनामी के अंधकार से उन्हें उबारने का पुण्य कार्य उद्भ्रान्त जी ने किया, यह श्रेय उन्हें जाता है। यह न केवल सराहनीय है, बल्कि ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय भी है। यही बात कण्डु ऋषि पर भी लागू होती है कि उद्भ्रान्त जी ने उन्हें भी गुमनामी के अंधकार से निकाला, और उनकी प्रेरक कथा संसार तक पहुँचाई। आधुनिक काल की छन्दमुक्त कविताओं को सामान्यतः नीरस, उपदेशविहीन, कुंठा-आरोप-भ्रष्टाचार आदि की अभिव्यक्ति करने वाली कविताएँ माना जाता है जो पढ़ने के बाद शीघ्र विस्मृति के गर्भ में चली जाती हैं। उद्भ्रान्त का यह खण्डकाव्य अपनी विशेषताओं के कारण ऐसे समय में एक उपलब्धि सिद्ध होगा।